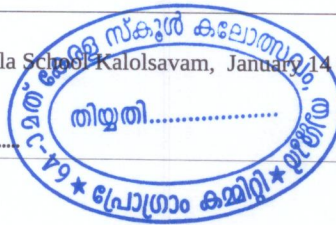


हादना मेरेलिए मंजूर नही ...
जिन्हें जीवन यात्रा में हादना नही मुझे..

(क्यों पिताजी? नियती हमारे साथ
ऐसा खेल क्यों खेल रहा है? आपके बिना,
आपके बिना हम नहीं जी सकेंगे पिताजी।)
मेरी माँ के गले से जब इन शब्द बाक्यो इस
कथन बाहर आईं तब नंद सिंह को ऐसे लगा
जैसे उसके बाक्यो हवा को उसकी आँखों से
बहती आँसु लिपट रहा है। अपने बेटे को
ऐसी दुर्दशा में ऐसे होते हुए देखने से
नंद के मन और तन टूटने लगा। परंतु उस
कैदी बाप, उस कैदी प बाप कुछ नहीं कर सकता
था।

(आपने क्या गलती की पिताजी? उन पापियो
ने आपको इस मुकदमे में फँसा दिया था न?
आपके साथ बड़ा छल करके आपको ऐसी
दालत में छोड़ दिया उन्होंने। और अब अब
निर्दोष होकर भी उन पापियो क आपको मृत्यु
हंड की सजा मिला ... उन पापियो के स्थान



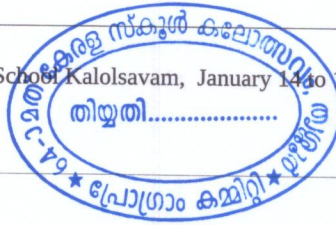
पर।' मीरा के मुह से उतरी एक एक वाक्य
 में समाज के लिए उसकी नफरत फूट थी।
 उसकी आँखें क्रोध और पीड़ा से भर थी।
 'मेरी जान बड़े-बड़े लोग हैं न वह' उसके
 पास सब कुछ है, पर, हमारे पास क्या?
 मैं तो सिर्फ एक तुच्छ या नौकर था न उनका,
 उन्होंने ऐसा सोचा होगा की मेरा जीवन भी
 तुच्छ होगा इसलिए आज, इस कैद में उनके जगह
 मैं पड़ी हूँ बितिया।' नंद ने एक पल के लिए
 शोक से सोचा फिर कहा 'मीरा मैं जानता हूँ
 मेरे बिना जीवन सरल नहीं होगा लेकिन वादा
 हो मुझे मीरा कि तुम जरूर कानून सीखकर
 एक अच्छी फु' मेरे जैसे अभागियों को बर्खास्त
 बचाने के लिए प्रयास करेगा और जो लोग आज
 हमारा तिरस्कार किया है, वह तुम्हें इज्जत
 और सम्मान देगा और तुम्हें पुलिस में डम फूटारें।'
 नंद के सुने आँखें तब आशा से चमक रहे
 थे।

'कैसे पिताजी? आपने ही कहा था नह
 कि हमारे पास कुछ नहीं है, पैसा,

सम्मान आपका प्यार सब कुछ हमसे हमारे
 परिवार के। दायों से एक के बड़े एक करके
 निकल रहा है। आपने हमारे घर का नीव था
 आपके बिना परिवार टूट जाएगा, पिताजी 'मैंने'
 अपने जीवन में सब कुछ खो दिया 'आप'
 मेरा पति और मेरी सारी खुशियाँ। अब
 सीधे कुछ सीखना नहीं चाहती हूँ मेरा मन
 बल्कि जीने का भी इच्छा नहीं। 'उस अब'
 मीरा के वाक्यों में हताशा का ध्वनी थी।
 'बेटी' - वह ने उसे हिलासा देने के लिए अपने
 मुँह जब खोला तब एक कठोर शब्द ने
 उसे मना किया। 'ओय समय खतम हुआ है'
 जल्दी निकल।' उस प्लीस पहरदार के
 वाक्यों में प्यार या दया का अंशमात्र भी नहीं
 था। मरने के पहले एक आखिरी बार एक
 बाप अपने बेटी को देख रहा था उससे बात
 कर रहा था लेकिन उस साहब ने उसे ऐसा
 कुछ और समय रखने का अनुमति नहीं दिया।
 मीरा ने अपनी बाप के चेहरे को एक अंतिम
 बार देखा, वह कुछ नहीं कह रही थी, बस



Item Code: 952



Participant Code: 038

उस यन्त्रा ही एक लंबी बातचीत लग रहा था। एक बाप और बेटी के बीच भावों की अभिव्यक्ति के लिए वह ही एक नज़र भी पड़ती थी।

मीरा ने कैद के बाहर आई। अ उस घोर अंधकार में उसे ऐसा लगा कि वह उसकी जीवन को भी अंधकार ने निगल लिया है। उस यहीं में वह काँप रही थी लेकिन घर जाने का इच्छा तक नहीं था। वहाँ 'उसकी माँ' अपने पति - अवश्य लौटिगा इस उम्मीद के साथ - अब भी दू बैठ रही होगी क्या उत्तर है, उसे अपने भुखी माँ को खाना या मन की शांती देने नहीं दे सकती है उस अभागी पुत्री, नह के कैद जाने के खबर सुनकर जब मीरा की पती ने उसकी उपेक्षा किया तबसे वह अपनी माँ के साथ अपने घर रहती है। लोगों के वाक्यों में 'अनेक' अस्तो से के तरह उन होने और तो के हृदय को पीड़ा और खयाल करते थे उसके मन को कुचले देने थे।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

लेकिन उस समय में भी, वह माँ और बेटी को दारुने का संग्रह नहीं थी। वह ६ भीषण गरिबी में और पीडा में भी नंद को बचाने के उम्मीद में, उसके नंद के ओर की प्यार के बल में लड़ा लेकिन सब विफल हो गया। कल नंद के साथ ही उनके जीवन का मेरा जो शांति रेशमी का कण बचा था, वह भी चल जाया। नंद ने कैद में पड़ने के बाद जब-जब भी मीरा को देखा तब कहता था बेटी, पुलिस बन जाओ, और कानून का सच्चा पब्लिक बनो बस यही था उसकी अंतिम इच्छा।

‘कैसी बेटी हूँ मैं’ अपनी माँ और बाप दोनों की इच्छा नहीं सफल नहीं होगा मुझसे, उन्हें अपनी अपने पीडा से भी नहीं बच सकती हूँ मैं समाज के आँखों में भी मुझे कोई मूल्य नहीं।’ उसने रोकर ऐसा कहा पर किसीने ६ कोई नहीं था वहाँ उसे ६ हिलासा देने के लिए। उसने प्यार, उसने एक क्षण सोचकर अपनी आँखों अपनी लाल, मुलायम चेहरे से

പിछ लिया। 'नही जीना है मुझे यह जीवन।' रासा कहकर वह समुद्र के ओर की मार्ग पर चलने लगी। चाँद की रोशनी में नवले समुद्र की जल उस दिन शांत थी जैसी समुद्र को यह जानत भी मीरा की पीड़ा जानती थी। समुद्र के किनारे का धूल मीरा को मना कर रहा था लेकिन मीरा ने बड़ी मुश्किल से एक-एक कदम करके आगे बढ़ी अपनी सृष्टि के ओर।

'हीरी एक क्षण रोकिए देखे न मेरे पाय बहुत भीठ खी मीठा और रंग-बिरंगी मिठाई है कुछ खरीदो न?' एक मधुर सी स्वर सुनकर मीरा पीछे मुड़कर देखा। एक छोटा सा लड़की वह दृष्ट रहा था और उसकी हँसी आसमान में दूँधी पड़ी चाँद को भी पशस्त करनेवाली थी उसके आँखों में आकाश में हिलमिलाने तारे जैसी चमक थी लेकिन उसका चेहरा एक मरझाया हुआ फूल जैसा था, सुंदर और दुर्बल।



देखते ही चल कर जाकर चलते हैं।
मैं भी रो रही थी, कल अस्पताल में
भाई के डॉक्टर साहब को देने के लिए हमारे पास
पैसा तक नहीं। इसलिए मैं आपको देखकर यहाँ
आई पैसा नहीं मिला तो भाई भी बापा के साथ
तब मर गया तो नहीं आप खरीद लीजिए न।
अब उस लड़की के खर में बस दीनता थी।
'हाँ, हाँ तीन दे दो मुझे' - मीरा ने कहा और
उसके पास जो पैसा थी वह दे दिया उसी
लड़की को। हाथ में रखा गया पैसा को
देकर वह बारह साल की लड़की खुश हुई।
'धन्यवाद दीदी' - ऐसा कहकर उसने अपने
स हाथ के एक किताब किताब के पन्नों के
बीच पैसा रख दिया।

(अरे तुम किताब पढ़
पढ़ना पसंद करती हो? कैसा किताब है यह
क्या है इसमें?) मीरा ने पूछा। 'दीदी इसमें
हमारे शरीर के बारे में लिखा गया है, बहुत
सारी चित्र भी हैं देखो।' लड़की ने बड़ी
उत्सुकता से कहने लगी। 'मैं यह पढ़कर



बड़ी डॉक्टर बनेगी। मेरी बाप जैसे लोगों की इलाज करेगी। किसीको मरने नहीं दूँगी मैं।' मीथ ने चकित हो-इ-इ-इ उस लड़की के बातें सुनकर।

‘अरे खुशी यहाँ क्यों हो? रात में बाहर जाने को किसने कहा?’ उसकी माँ ने उसकी तलाश में थी। वहाँ आई। उस दुर्बल-कन थी औरत ने खुशी मीथ को कहा

‘बड़ी न नटखट है मुझे न बताकर यहाँ आई, आपको कोई परेशान’ दिया तो माफ़ हीनिए।’

‘नहीं यह मुझे बहुत पसंद आई बड़ी डॉक्टर बनेगी यह भविष्य में।’ मीथ ने कहा।

‘धन्यवाद जी।’ उस माँ और बड़ी ने आगे बढ़ने लगा। ‘युनिफ़ इतने मुश्किल और दुर्लभ होने के बाद भी आप लोगों से इतना उम्मीद कैसे?’

मीथ यह पुछने से अपने आप को रोक नहीं सकी। उस औरत ने पीछे मुड़कर अपने होठ पे एक हल्का मुस्कान बनाकर रखकर कहा ‘माँडम जी इसके पिता ने मरने के पूर्व ‘पहले हमारी’ खुशी को यह किताब देकर



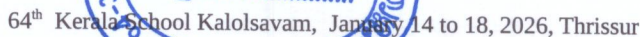
रोशा कहा कि 'बेटी आज तेरे बाप रोशा मल्ले के तरह कोई न को किसी को मरना नहीं चाहती, कि तु जहर एक डॉक्टर बनेगी'। मेरी बेटी ने उसे जो जवाब दिया है 'वह ही हमारा उम्मीद है मेरा जीवन का रोशनी।' 'उसे दू थप्पे को देना नहीं देगी मैं, इस झोपड़ी आज या कम गिरेगा लेकिन हमारा इच्छा और मन के बल कभी नहीं नष्ट होगा हमें हाथों का मजबूत नहीं है माडम जी।' रोशा कहकर उस आँख ने अपनी बेटी के हाथ पकड़के उसे बड़ी।

नफरत पीडा हताशा, दुख और दुख ये गरी शब्दों को सुनकर भारी है दुई में थी मीरा के मन। आज उस गरीब आँख के वाक्यों निराश जो उम्मीद से भरी थी वह सुनकर मीरा को रोशा लगा जैसे उसे नई ताकत मिली है, जीने और जीवन यात्रा में उठने के लिए। 'एक छोटी सी, भोले-भाली लड़की यह अपने मन के बल पर इतना



विश्वास कर सकती हो, तो मैं कुछ क्यों नहीं? मीरा अपने आप को पुछ और अपने मशक ये एक कोठुन का किताब निकाल दिया जो उसने कई साल पहले ही बंद किया पढ़ना बंद किया था।

बीच उसने जब उस किताब के पन्नों की पुनः सफा किया तब उसके मन में एक ठ शक्ति भाव उत्पन्न जाग उठी। पैसा और स्थान के कमी ये अनेक लोग आज भी नीती ये वंचित हैं उसकी पिता के तरह उन सबको बचना ही मेर अपने पिता को देनेवाली सबसे बड़ी इनाम होगी। समाज के धृणा का शिकार बने का नहीं बस समाज को सुताखे का है उसका जीवन, यह मीरा को जब समझ गयी, तब बड़ों की पैरों भी हवा में रोये नाच रहे थे, जैसे वह भी खुश हुई है। मीरा ने आगे बढ़ने लगे, समुद्र की नदी नई जीवन की ओर। ~~उसने अपने रोये होशते~~ * (जीवन के मं इस यात्रा में दाखे का मंजूर नहीं है मुझे) ऐसा



Item Code:

Participant Code: _____

038

बार-बार कुछ होकर वर आगे बढ़े वही ...
इस बार उसके मुँह से उतरी ^{एक-एक} शब्द में ये
प्रतीक्षा छलक रहे थे। हाँ, उस दिन एक
मीश ने इस उथल-पुथल में अपने जान ले
लिखा था। एक मीश ने अपने जान ले
लिया था। उसके साथ-साथ एक दूसरी मीश
का जन्म भी हुआ। जो मीश से समुद्र के
गहराइयों में गई उसे जीने का मंजूर नहीं
था, और जिस ^{नई} मीश का जन्म हुआ उसे
जीवन से याता में हारने का मंजूर नहीं
था ^{बस} अपने जीवन के साथ-साथ अनेकों के जीवन
को ^{अधिकार} रूपी शत्रु के पंथ के नीचे से
बचने का आशा थी। इस समाज से अनीति मिटाने
का शक्ति इच्छा थी।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).